कालीनों का निर्यात

1341. **डा. रत्नाकर पाण्डेय** : क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले तीन वर्षों में निर्यात किये गये कालीनों की संख्या और मूल्य कितना है ;

(ख) क्या यह सच है कि कालीन के निर्यात में हाल में गिरावट आई है ; और

(ग) यदि हां, तो इसके लिए सरकार द्वारा क्या उपचारी कदम उठाए जा रहे हैं ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री खुर्शीद आलम खान) : (क) कालीनों के निर्यातों के आंकड़े मीटरों में रखे जाते हैं और आंकड़े केवल 1982-83 तक के उपलब्ध हैं । आंकड़े निम्नोक्त प्रकार हैं ।

वर्ष	मात्रा लाख वर्ग मीटर में
1980-81	46.4
1981-82	49.1
1982-83	50.3

गत तीन वर्ष के दौरान उनी कालीनों के निर्यातों का अनन्तिम मूल्य निम्नोक्त प्रकार था :--

वर्ष	मूल्य करोड़ रु. में
1983-84	147.7
1984-85	157.6
1985-86	159.9

(ख) जी, नहीं ।

(ग) हांलाकि कोई विशेष गिरावट नहीं हुई है, सरकार ने निम्नलिखित उपाय किये हैं ।

(1) उच्च मूल्य वर्धित कालीनों के निर्यातों को प्रोत्साहन देने के लिए कालीनों के लिए एक अलग निर्यात संवर्धन परिषद स्थापित की गई है ।

(2) ऐसे मामलों में जहां कालीनों का एफ. ओ. बी. मूल्य 650/-रु. प्रति वर्ग मीटर से अधिक है, नकद मुआवजा सहायता को 17 प्रतिशत से बढाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया है।

(3) एफ. ओ. बी. मूल्य के 3 प्रतिशत की दर से शुल्क वापसी की अनुमति दी गई है ।

(4) आर. ई. पी के आधार पर ऊन के शुल्क मुक्त आयात की योजना को उदार बनाया गया है ।

(5) ऊन के आयात पर शुल्क को मार्च, 1986 से 40 प्रतिशत से कम करके 20 प्रतिशत कर दिया गया है।

कालीनों का उत्पादन

1342. **डा. रत्नाकर पाण्डेय** : क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले तीन वर्षों में कालीनों के उत्पादन में कितनी वृद्धि हुई है ;

(ख) इन में से कितने मूल्य के कालीन स्वदेशी बाजार में बेचे गए ;

(ग) कितने मूल्य के कालीनों का निर्यात किया गया ;

(घ) कितने मूल्य के कालीन भंडारों में रखे हुए हैं ; और

(ङ) कालीन बुनकरों के हित में उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री खुर्शीद आलम खान) : (क) इस उद्योग का व्यापक रूप से दूर दूर तक फैले होने तथा पूर्णतः विकेन्द्रीकृत होने के कारण कालीनों के उत्पादन के संबंध में कोई पूख्ता आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । तथापि, मोटे तौर पर लगाए गए अनुमान के आधार पर उत्पादन जो 1980-81 में 170 करोड़ रु. का हुआ, था बढ़कर 1985-86 में 210 करोड़ रु. का हो गया ।

(ख) कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । साधारणतया यह अनुमान होता है कि उत्पादन का 10-15 प्रतिशत घरेलू बाजार में बिकता है ।

(ग) देश में निर्यात किए गए कालीनों के अन्तिम मूल्य आगे दिए गए हैं:--